अध्याय-2

क्या, कब, कहाँ और कैसे?

सोनी का सवाल–सोनी अपनी सहेली पिंकी के साथ टेलीविजन देख रही थी। टेलीविजन पर दिखाया जा रहा था कि मानव धरती पर हजारों साल से रह रहा है । सोनी सोचने लगी और पिंकी से बोली इतने वर्षों पहले क्या हुआ यह कोई कैसे जान सकता है ? पिंकी जो सोनी से पांच वर्ष की बड़ी थी इस प्रश्न का उत्तर निम्न तरीके से देना शुरू किया।

हजारों साल पहले क्या हुआ, यह कैसे पता लगाएँ ?

कल क्या हुआ था ?यह जानने के लिए हम रेडियो, टेलीविजन या फिर अखबार की मदद लेते हैं। दस–बीस साल पहले क्या हुआ–यह हम अपने माता–पिता, दादा–दादी या नाना–नानी से जान लेते हैं। लेकिन हजारों वर्ष पहले क्या हुआ था? इसकी जानकारी हम इतिहास से प्राप्त करते हैं। यथा–हमारे पूर्वज कौन थे? वे कहाँ रहते थे? वे क्या खाते थे और कैसे कपड़े पहनते थे? अतीत से लेकर वर्तमान तक जानकारियाँ हमें इतिहास से ही मिलती है ।

अध्ययन का काल निर्धारण कैसे करें ?

अतीत से लेकर वर्तमान तक विभिन्न घटनाओं का तिथि क्रमानुसार अध्ययन एवं विश्लेषण ही इतिहास का विषय है। इस काम में आसानी के लिए इतिहास को काल खण्डों में बांटा जाता है । सामान्यतः तीन कालखण्ड निर्धारित किए जाते हैं–प्राचीन, मध्य एवं आधुनिक । किन्तु यह ध्यान रखना आवश्यक है कि ऐतिहासिक प्रक्रिया निरन्तर चलती रहती है और यह विभाजन इस प्रक्रिया में कहीं भी बाधा नहीं बनते ।

प्रत्येक ऐतिहासिक युग की अपनी विशेषताएँ होती है । भारत में प्राचीन काल मानव जाति के आरंभिक क्रियाकलापों से आठवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध(700–750ई०)तक निर्धारित किया

जाता है। इसके आरंभिक चरण को पूर्व ऐतिहासिक काल भी कहा जाता है, क्योंकि उस युग की घटनाओं का कोई क्रमबद्ध लिखित इतिहास उपलब्ध नहीं है । इस काल में मनुष्य ने आग एवं पहिया का उपयोग सीखा, खेती एवं पशुपालन सीखा और इसी समय गांव एवं कस्बों तथा शहरों का विकास हुआ। छठी शताब्दी ई.पू. से सुसंगठित राज्यों का निर्माण आरम्भ हुआ और कालान्तर में विशाल साम्राज्यों की स्थापना हुई। छठी शताब्दी ई. तक आते–आते इन साम्राज्यों का विघटन होने लगा और पुनः छोटे–छोटे राज्य अस्तित्व में आने लगे ।

आठवीं शताब्दी के मध्य (750 ई0) तक ये राज्य धीरे–धीरे कमजोर पड़ने लगे परन्तु व्यापार एवं नगरों का फिर से विकास हुआ। ग्यारहवीं शताब्दी तक नये सैन्य साधन और उन्नत उत्पादन तकनीक का विकास हुआ। इस्लाम के माध्यम से नई विचारधारा का भारत में आगमन हुआ और पुनः भारत में विशाल साम्राज्यों का गठन संभव हुआ। सांस्कृतिक समन्वय भी हुआ और सामाजिक सामंजस्य भी स्थापित हुआ। यह प्रक्रिया अठारहवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में पुनः पतनशील अवस्था में आ गयी। इसी के साथ दूसरा प्रमुख काल या मध्यकाल का अन्त हुआ ।

आधुनिक काल का प्रारंभ अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध से हुआ, जब पश्चिमी देशों के द्वारा नए विचार और नयी प्रशासनिक व्यवहार भारत में लायी गयी । इससे शिक्षा, स्वास्थ्य, संचार–व्यवस्था एवं आवागमन में विशेष प्रगति हुई। दुर्भाग्यवश यह नयी प्रशासनिक व्यवस्था विदेशियों द्वारा स्थापित की गयी थी जो हमारे देश के आर्थिक संसाधनों का लाभ प्राप्त करना चाहते थे । इस व्यवस्था को 'उपनिवेशवाद' कहते हैं । इसके अन्तर्गत किसी उन्नत देश किसी दूसरे कमजोर देश पर अधिकार कर उसका आर्थिक शोषण करता है । स्वाभाविक था कि भारतीयों में इसके विरुद्ध एक चेतना जगी। उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध से भारत में इस औपनिवेशिक सत्ता के विरुद्ध राष्ट्रीय आन्दोलन सक्रिय हुआ जो सत्य और अहिंसा के सिद्धान्तों से प्रेरित रहा । सन् 1947 में भारत को आजादी मिली और एक नया संविधान बना। इस संविधान के द्वारा जनता को अपने प्रतिनिधियों द्वारा शासन का अधिकार मिला। यही

काल भारत के आधुनिक इतिहास का प्रतिनिधित्व करता है ।

मानव जाति के इतिहास को हम कैसे जानते हैं ?

मानव जाति के इतिहास की जानकारी हमें कई स्रोतों से मिलती है । इनमें से एक स्रोत अतीत में लिखी गयी पुस्तकें हैं। इन पुस्तकों को हम ढूंढ़कर पढ़ते हैं। इनमें राजाओं एवं आम लोगों के जीवन, धार्मिक विचार एवं मान्यताएँ, औषधियों तथा विज्ञान आदि सभी प्रकार के विषयों की चर्चा मिलती है। ये पुस्तकें हाथ से लिखित होने के कारण 'पाण्डुलिपि' कही जाती है। ये पाण्डुलिपियां प्रायः ताड़पत्रों अथवा भोजपत्रों पर लिखी मिलती है। बहुत सी पाण्डुलिपियाँ अब नष्ट हो चुकी है। कुछ पुस्तकालयों एवं संग्रहालयों में सुरक्षित हैं। पटना की खुदाबख्श लाइब्रेरी एवं पालीगंज स्थित भरतपुरा के गोपाल नरायण सिंह सार्वजनिक पुस्तकालय में ऐसी अनेक पाण्डुलिपियां सुरक्षित हैं। संग्रहालय और अन्य संस्थाओं में भी आप पाण्डुलिपियां देख सकते हैं । इसके अतिरिक्त लिखित स्रोतों में अनेक महाकाव्य, कविताएँ एवं नाटक आदि हैं। इनमें से कई संस्कृत भाषा में लिखे गए हैं जबकि अन्य प्राकृत, तमिल एवं कन्नड़ आदि में है ।
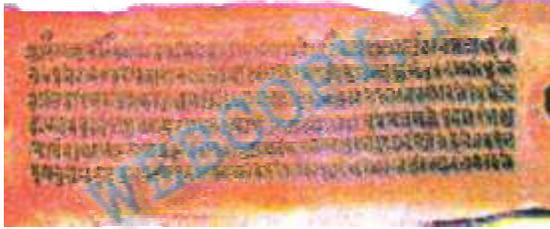
ताड़पत्रों पर लिखी गयी पाण्डुलिपि
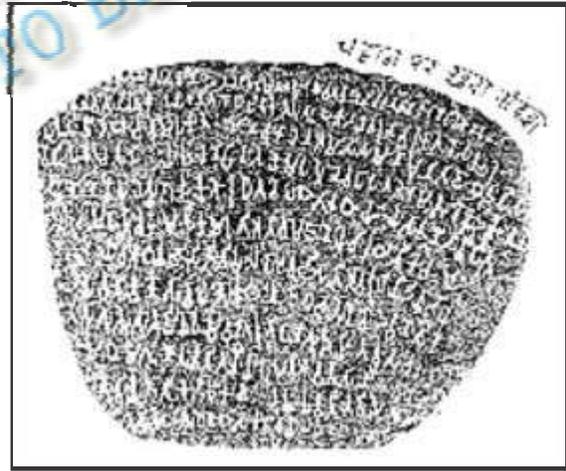
अभिलेख

हम अतीत की जानकारी अभिलेखों से भी प्राप्त करते हैं। 'अभिलेख' पत्थर अथवा धातु की सतहों पर नुकीले औजारों द्वारा उत्कीर्ण किए होते हैं। इन अभिलेखों में राजाओं तथा अन्य महत्वपूर्ण लोगों के आदेश और उपलब्धियाँ वर्णित इन्हें वैसी जगहों पर लगाया जाता

था जहाँ अधिक से अधिक लोग आते जाते थे। ताकि अधिक से अधिक लोग उसे देख सके और उसमें लिखित आदेशों का पालन कर सकें ।

इसके अतिरिक्त अतीत में बनायी गयी एवं इस्तेमाल में लायी गयी वस्तुओं के माध्यम से भी हम अतीत की जानकारी प्राप्त करने में सफल होते हैं। ऐसी वस्तुओं में पत्थर एवं ईंट से बनी इमारतों के अवशेष, औजार, हथियार, बर्तन, आभूषण, मूर्तियां, चित्रा और सिक्के आदि आते हैं । ये वस्तुएँ पुरातात्विक स्रोत के रूप में जानी जाती है अर्थात् काफी प्राचीन होने के कारण इनके अवशेषों को जमीन की खुदाई कराकर प्राप्त किया जाता है। पुरातात्विक वस्तुओं का अध्ययन करनेवाला व्यक्ति 'पुरातत्वविद्' कहलाता है।

सिक्का और मुहर   मृदभांड

पुरातात्विक वस्तुओं में जानवरों, पक्षियों एवं मछलियों की हड्डियां भी मिलती हैं जिससे अनुमान लगाया जाता है कि अतीत में किस आकार–प्रकार के जीव पाये जाते थे । अनाज एवं कपड़ों के भी अवशेष प्राप्त हुए हैं, जिससे पता चलता है कि अतीत में लोगों के पास खाने के लिए कौन–कौन से अनाज थे और लोग किस प्रकार के कपड़े पहनते थे ?

डा० स्पूनर ने पटना के कुम्हरार नामक स्थान में खुदाई द्वारा चन्द्रगुप्त मौर्य के राजमहल के स्तम्भ निकाले हैं। इस खुदाई में सोने के बैलों के टुकड़े प्राप्त हुए हैं। इससे मगध साम्राज्य की समृद्धि एवं भव्यता पर प्रकाश पड़ता है।

इस तरह पाण्डुलिपियों, अभिलेखों सिक्कों तथा पुरातत्व से संबंधित अन्य स्रोतों के आधार पर पुरातत्वविद् एवं इतिहासकार अतीत का अध्ययन करते हैं और इन्हीं स्रोतों के माध्यम से वे अतीत की व्याख्या करते हैं ।

'सिक्के' शासकों द्वारा जारी किए जाते थे जिसपर राजकीय चिन्ह, धर्मिक चिन्ह या कोई लिपि अंकित होती थी। सिक्कों का अध्ययन 'मुद्रा शास्त्र' कहलाता है।

खुदाई में मिली वस्तुओं के विश्लेषण में समय का निर्धारण करना बहुत महत्वपूर्ण है। वैसे तो समय निर्धारण के लिए कई विधियां अपनायी जाती है लेकिन जो सामान्यतः प्रचलित है, वह है 'रेडियो कार्बन विधि' या 'कार्बन–14 पद्धति।

रेडियो कार्बन विधि :

तिथि निर्धारण की यह काम भौतिकशास्त्री करते हैं । सारी वस्तुओं में एक प्रकार का रेडियोधर्मी पदार्थ होता है जो कार्बन–14 कहलाता है । रेडियोधर्मी वे पदार्थ होते हैं जिनमें से निश्चित दर में छोटे–छोटे कण निकलते हैं। जब मनुष्य पशु या पौधा जिन्दा होते हैं तब वो जिस मात्रा में वायुमण्डल से कार्बन–14 लेते हैं, उसी मात्रा में रेडियोधर्मिता के कारण मरने के बाद उसे खो देते हैं। जब कोई मर जाता है तब वह वायुमण्डल से कोई कार्बन–14 नहीं लेता है। यद्यपि वह इसे एक निश्चित दर पर खोता रहता है। भौतिकशास्त्री इसी निहित कार्बन–14 की मात्रा का पता लगाकर उस जीव की आयु निश्चित करते हैं।

तिथियों का मतलब :

प्राचीन काल में हमारे देश में तिथियों की गणना विक्रम संवत और शक संवत के आधार पर होती थी, लेकिन अब पूरे विश्व में एक मानक के रूप में तिथियों की गणना मुख्यतः ईसाई धर्म प्रवर्तक ईसा मसीह के जन्म की तिथि से की जाती है। इसमें ईसा मसीह के जीवन को शून्य वर्ष माना जाता है। उनके जन्म के पूर्व की सभी तिथियों के आगे अंग्रेजी में बी. सी. (बिफोर क्राइस्ट) और हिन्दी में ई.पू. (अर्थात् ईसा पूर्व) लिखते हैं। इसी प्रकार ई. की शुरूआत उनके जन्म के वर्ष से है। जैसे यदि कहीं 2009 ई. (ए.डी.–एनो डोमिनीं) लिखा देखते हैं तो इसका तात्पर्य ईसा मसीह के जन्म के बाद के 2009वें वर्ष से है। इसी प्रकार यदि वही 2500 ई.पू. लिखा हुआ मिलता है तो इसका अर्थ है ईसा मसीह के जन्म के 2500 वर्ष पहले का समय।

तिथि निर्धारण को इस ग्राफ से समझा जा सकता है–

ई.पू. (**B.C.**) ईसा मसीह का जन्म सन् ई. (**A.D.**)

50,000	10,000	1000	500	100	0	100	500	1000	1500	2000	2010
BC	**BC**	**BC**	**BC**	**BC**		**AD**	**AD**	**AD**	**AD**	**AD**	**AD**
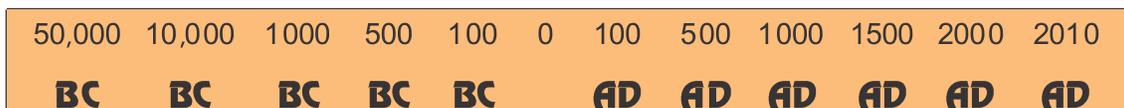
भागौलिक पृष्ठभूमि :

प्राचीनकाल से लेकर अब तक के भारत के इतिहास को समझने के लिए सर्वप्रथम उसकी भौगोलिक रूपरेखा की जानकारी आवश्यक है। भौगोलिक दृष्टिकोण से भारत को मुख्यतः चार भागों में बांटा जा सकता है–

(1) उत्तर के पर्वतीय प्रदेश, जो तराई के जंगलों से प्रारंभ होकर हिमालय के शिखर तक फैले हुए हैं। इसमें कश्मीर, कांगड़ा, कुमायूं तथा सिक्किम के प्रदेश सम्मिलित हैं ।

(2) उत्तर का मैदान जो अपनी उपजाउ भूमि और अधिक पैदावार के लिए प्रसिद्ध है। इसमें सिन्धु, गंगा–यमुना और सहायक नदियों से सिंचाई का काम होता है। यह देश का सर्वाधिक उपजाऊ क्षेत्र है ।

(3) दक्षिण के पठार के अन्तर्गत उत्तर में नर्मदा एवं ताप्ती नदी बहती है। इस भाग में विन्ध्य तथा सतपुड़ा की पहाड़ियां हैं जो उत्तर भारत को दक्षिण भारत से पृथक् करती है ।

(4) सुदूर दक्षिण के मैदान में गोदावरी, कृष्णा तथा कावेरी के उपजाउ डेल्टा वाले प्रदेश मिले हैं ।
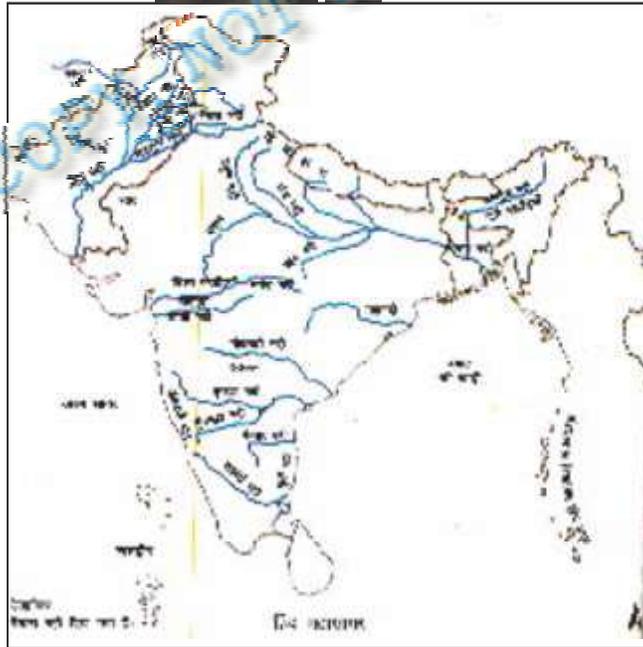
भारतीय उप महाद्वीप

भारतीय उपमहाद्वीप के उत्तरी सीमा पर स्थित पर्वत श्रृंखला भारतीय उपमहाद्वीप को पश्चिमी तथा मध्य एशिया से अलग करते हैं। लेकिन इन पर्वतों में अनेक दर्रे (रास्ते) हैं जैसे– खैबर, बोलन एवं गोमल दर्रा । इन दर्रो के माध्यम से भारत का सम्पर्क अपफगानिस्तान तथा ईरान से बना रहता था। दर्रे पहाड़ियों के बीच के संकरे रास्ते होते हैं। भारतीय उपमहाद्वीप के उत्तर पश्चिमी क्षेत्र में ही मेहरगढ़ जैसे स्थान हैं जहाँ लगभग छः हजार ई.पू. में लोगों ने सबसे पहले 'गेहूं' तथा 'जौ' जैसी फसलों को उपजाना आरम्भ किया। भेड़–बकरी तथा गाय–बैल जैसे पशुओं को पालतू बनाना शुरू किया। उत्तर–पश्चिम क्षेत्र में ही सिन्धु एवं इसकी सहायक नदियां बहती हैं । सहायक नदियां आगे चलकर एक बड़ी नदी में मिल जाती है। लगभग 4700 (2500 ई.पू.) साल पहले इन्हीं नदियों के किनारे नगरीय सभ्यता का विकास हुआ ।

उपमहाद्वीप के उत्तर–पूर्व में गारो, खासी, जयन्तिया, मिश्मी और नागा पहाड़ियां हैं। इन पहाड़ियों के नाम पर ही यहां के आदिवासी मानव समूह की पहचान है।

भारतीय उपमहाद्वीप के बीच विन्ध्य पर्वत विभाजक रेखा है। विन्ध्य के दक्षिण में ब्रह्मगिरि स्थल पर लगभग तीन हजार साल पहले लोगों ने 'महापाषाणी' संस्कृति का निर्माण किया था। महापाषाणी संस्कृति में मृतक को दफनाकर उसके चारों तरफ बड़े–बड़े पत्थर गाड़ दिए जाते थे ।

विन्ध्य पहाड़ियों के उत्तर–पूर्व एवं ब्रह्मपुत्र नदी के पश्चिम में गंगा एवं उसकी सहायक

व्यापारीक मार्ग एवं कृषि स्थल को दर्शाता भारत का मानचित्र

नदियां बहती हैं विन्ध्य पहाड़ियों के उत्तर में स्थित कोलडिहवा एवं चोपानीमांडो ऐसे स्थल हैं जहाँ सबसे पहले चावल (धान) उपजाया जाता था ।

उत्तर भारत में बहनेवाली नदी गंगा के दक्षिण का क्षेत्र प्राचीनकाल में 'मगध' नाम से जाना जाता था। यहाँ के शासक बहुत ही शक्तिशाली थे और उन्होंने यहाँ एक विशाल साम्राज्य की स्थापना की थी।

भौगोलिक रूपरेखा के इस विवरण से स्पष्ट है कि इस उपमहाद्वीप में यद्यपि अलग–अलग क्षेत्रों में लोग अपने–अपने ढंग से मानव समाज का निर्माण कर रहे थे, परन्तु ये कभी भी एक–दूसरे से अलग नहीं रहे। ये लोग ऊँचे पर्वतों, पहाड़ियों, रेगिस्तानों, नदियों तथा समुद्रों में जोखिम उठाकर एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र की यात्रा करते थे और उपयोगी वस्तुओं का विनिमय (खरीद–बिक्री) करते थे।

इसके अलावे लोगों को शिक्षा देने के लिए धार्मिक गुरु भी हमेशा भ्रमण करते रहते थे । यहाँ तक कि भारतीय उपमहाद्वीप के बाहर के लोग भी खैबर, बोलन एवं गोमल के रास्ते भारत आते रहे । इस आवागमन से हमारी सांस्कृतिक परम्परा समृद्ध हुई।

देश का नाम :

हम अपने देश के लिए प्राय: इण्डिया तथा भारत जैसे नामों का प्रयोग करते हैं । इण्डिया शब्द 'इण्डस' से निकला है जिसे संस्कृत में 'सिन्धु' कहा जाता है। लगभग 2500 वर्ष पहले उत्तर–पश्चिम की ओर से आनेवाले ईरानियों और यूनानियों ने सिन्धु को 'हिंदोस' अथवा 'इंडोस' कहा तथा इस नदी के पूर्व में स्थित भूमि प्रदेश को 'इण्डिया' कहा। फारसी में यही शब्द 'हिन्द' एवं ''हिन्दुस्तान' जैसे नामों की उत्पत्ति का कारण था। इसी तरह एक दूसरी मान्यता के अनुसार इस देश का नाम भारत 'भरत' नामक मानव समूह के नाम पर पड़ा जो उत्तर–पश्चिम क्षेत्र में रहते थे। इसका उल्लेख ऋग्वेद (लगभग 1500 ई.पू.) में मिलता है।

अतः प्राप्त स्रोतों एवं साक्ष्यों के आधार पर आप प्राचीन भारत के इतिहास को आगे के अध्यायों में पढ़ेंगे। प्राचीन काल में भारत में मानव जीवन कैसा था ? प्रारंभिक समाज कैसा था? इसका क्रमिक विकास कैसे हुआ? यह सब आप अगले अध्याय में पढ़ेंगे ।

अभ्यास

आइये याद करें :

. वस्तुनिष्ठ प्रश्न :

(क) मनुष्य, पशु या पौधे के अवशेष की प्राचीनता का निर्धारण किस विधि से करते हैं ।

(i) कार्बन–14 पद्धति (ii) ताप संदीप्ति विधि

(iii) पौटैशियम–आर्गन विधि (iv) स्टोन हैमर विधि

(ख) उत्तर भारत को दक्षिण भारत से कौन पर्वत अलग करती है ।

(i) हिमालय पर्वत (ii) विन्ध्य पर्वत

(iii) पूर्वी घाट (iv) पश्चिमी घाट

(ग) चावल का प्राचीन प्रमाण कहाँ से मिला है ।

(i) कोलडिहवा (ii) महागिरि

(iii) मेहरगढ़ (iv) बुर्जहोम

2. खाली स्थानों को भरें ।

(क) .... क्षेत्र के अधीन विशाल साम्राज्य की स्थापना हुई ।

(ख) भौगोलिक दृष्टिकोण से भारत को .... में विभाजित किया जा सकता है।

(ग) .... ने कुम्हरार नामक स्थान की खुदाई करवाई ।

(घ) आधुनिक काल का प्रारंभ .... से हुआ ।

(ङ) ....क्षेत्र में महापाषाणी संस्कृति का निर्माण हुआ ।

3. निम्नलिखित को सुमेलित करें :

खासी –　　　　　　अनाज का प्रमाण

मगध–　　　　　　दक्षिण भारत

महापाषाणीक संस्कृती–　　प्रथम बड़ा साम्राज्य

चोपानीमांडो –　　　　जनजाति

आइये चर्चा करें:

1. इतिहास के अध्ययन से हमें कई तरह की जानकारी प्राप्त होती है?
2. पुरातत्त्व किसे कहते हैं?
3. इतिहास के अध्यन से अपने अतीत के बारे में क्या–क्या जानकारी मिलती है?
4. अतीत की जानकारी जिन–जिन स्रोतों के माध्यम से हो सकती है, उसकी एक सूची बनाएं।
5. देश का नाम भारत और इण्डिया कैसे हुआ ?
6. काल निर्धारण के कार्बन–14 पद्धति को बताएं ।

आओ करके देखें :

4. पुरातत्त्वविदों द्वारा खुदाई में प्राप्त वस्तुओं की सूची बनाइए।

5. भारत के मानचित्र पर निम्नलिखित स्थानों को दिखाएं।

(1) नर्मदा नदी　(2) गंगा नदी　(3) विंध्य पर्वत　(4) सतपुड़ा पहाड़ियाँ ।